राष्ट्रपति स्काउट एवं गाइड पुरस्कार समारोह के अवसर पर भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील का अभिभाषण

राष्ट्रपति भवन, 23 सितम्बर, 2009

मुझे वर्ष 2007-08 और 2008-09 के लिए राष्ट्रपति स्काउट एवं गाइड पुरस्कार प्रमाण-पत्र प्रदान करते हुए प्रसन्नता हो रही है। ये प्रमाण-पत्र परिश्रम और अनुशासन के सम्मान में दिए जाते हैं। इसलिए मैं सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई देती हूँ। भारत स्काउट एवं गाइड एक ऐसा अभियान है जो 'व्यक्ति' से ज्यादा 'सेवा' को महत्त्व देता है जो कि प्रशंसनीय है। राष्ट्रीय एकता की भावना को प्रोत्साहित करने और युवा विकास गतिविधियों को बढ़ावा देने में उनके सराहनीय कार्यों के लिए मैं सभी सदस्यों का आभार व्यक्त करती हूँ। मैं उनसे आग्रह करना चाहूंगी कि वे दूसरों को भी नि:स्वार्थ भावना से कार्य करने के लिए प्रेरित करें।

युवाओं के विकास हेतु एक समग्र दृष्टिकोण अपनाना बहुत जरूरी है ताकि उन्हें राष्ट्र और मानव सेवा के लिए तैयार किया जा सके। भारत युवाओं का देश है। इसकी 54 प्रतिशत जनसंख्या 25 वर्ष से भी कम आयु की है। भावी भारत के निर्माण में युवाओं को महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। उन्हें शिक्षा व कौशल प्रदान करना भी जरूरी है जिससे कि वे अपनी आजीविका बेहतर ढंग से अर्जित कर सकें। साथ ही यह भी महत्त्वपूर्ण है कि उनके मन में सम्यक् मूल्यों का संचार किया जाए और उनके व्यक्तित्व के मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक पहलुओं में निखार लाया जाए। सद्गुणों के अभाव में जीवन सुगंध रहित पुष्प के समान है। इस संदर्भ में मुझे गांधी जी का एक कथन याद आ रहा है। उन्होंने कहा था, ''यदि आप अपने चरित्र का निर्माण नहीं करेंगे तो आपकी विद्वत्ता निष्फल है।'' यह प्रसन्नता की बात है कि भारत स्काउट एवं गाइड व्यक्ति के संतुलित विकास का प्रयास कर रहा है और इस प्रयोजन के लिए वे व्याख्यानों, सेमिनारों, प्रतियोगिताओं और प्रदर्शनियों को बढ़ावा दे रहे हैं।

सभी माता-पिता चाहते हैं कि जीवन में उनके बच्चे बेहतर प्रदर्शन करें और साथ ही एक जिम्मेदार नागरिक बनें। युवाओं की ऊर्जा और क्षमताओं को राष्ट्र निर्माण में इस्तेमाल करना आवश्यक है। ग्रामीण युवाओं को भी इस कार्य में शामिल करना होगा। आज जिस व्यापक स्तर और विभिन्न रूपों में अवसर उपलब्ध हैं, उनके बारे में, मैं अपने विद्यार्थी जीवन में सोच भी नहीं सकती थी। विज्ञान और प्रौद्योगिकी की प्रगति से गतिविधियों और ज्ञान के नए क्षेत्रों का निर्माण हुआ है। देश के विकास के लिए लोगों की क्षमताओं तथा कृषि, उद्योग और सेवा क्षेत्रों में उत्पादकता बढ़ाने के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी का भरपूर इस्तेमाल करना होगा। युवाओं को अपना ध्यान नव कौशल और ज्ञान अर्जित करने पर केंद्रित करना चाहिए जिससे कि उनका उपयोग देशवासियों के कल्याण के लिए किया जा सके।

आज के युवा और विद्यार्थी भावी भारत के निर्माता हैं। आप सभी से बड़ी आशाएं हैं। मैं समझती हूं कि अनुशासन हमारे राष्ट्र के लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। चाहे हमारा स्कूल हो अथवा हमारा कार्य स्थल अथवा हमारा नागरिक जीवन हो, यदि हमारे दैनिक जीवन में अनुशासन होगा तो हम अधिक व्यवस्थित होंगे और उससे हमारे कार्य की उत्पादकता भी बढ़ेगी। इससे किसी भी समस्या का सामना दृढ़ता और साहस के साथ करने का विश्वास बढ़ेगा। यह भी जरूरी है कि हम ईमानदार बनें और नियमों और विनियमों का पालन करें। हमें भ्रष्टाचार और भ्रष्ट कार्यों को समाप्त करना होगा। परिश्रम, अनुशासन, समर्पण और दृढ़ संकल्प ऐसे पहिए हैं जिनके माध्यम से व्यक्ति मुश्किल रास्तों पर भी चलकर मंजिल पर पहुंच सकता है। आप युवाओं को, राष्ट्र को एक आदर्श लोकतंत्र, आर्थिक शक्ति और एक प्रगतिशील समाज बनाना है। सफलता प्राप्त करने के विषय में विलियम शेक्सपीयर ने कहा था, ''दूसरों से अधिक ज्ञान हासिल करो। दूसरों से अधिक काम करो।'' मुझे उम्मीद है कि आप अपना समय समझदारी से प्रयोग करेंगे और ज्ञान प्राप्त करने के लिए मेहनत करेंगे।

कई बार आप सरलता से सफलता प्राप्त कर लेते हैं तो कई बार आपको मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। विपत्ति समस्याओं का समाधान ढूंढ़ने तथा दूसरे अवसरों पर विचार करने के लिए आत्मनिरीक्षण का मौका बन सकती है। मैं

विद्यार्थियों से अपील करती हूँ कि वे जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए भली भांति तैयार रहें ताकि कोई भी अवसर उनसे छूट न सके।

इससे ज्यादा आप युवा, लोगों की मानसिकता बदलकर समाज से संकीर्णता और कुरीतियों को दूर करने में मदद कर सकते हैं। मैं आपको एक उदाहरण देती हूँ। बंगाल की एक 11 वर्षीय बालिका रेखा कालिंदी है जिसने दुल्हन बनने से इंकार कर दिया। कम आय होने के कारण, रेखा के माता-पिता उसका विवाह कर देना चाहते थे। लेकिन उसने यह कहकर विरोध किया कि वह अपनी पढ़ाई जारी रखना चाहती है और जब तक उसे नौकरी नहीं मिल जाती वह विवाह नहीं करेगी। अपने सहपाठियों और अध्यापकों की मदद से रेखा ने अपने माता-पिता को इस सामाजिक कुरीति के दुष्प्रभावों के बारे में बताया। उसके विरोध ने क्षेत्र में बाल-विवाह की बुराइयों के प्रति जागरूकता फैला दी है। वह पढ़ रही है और मुझे विश्वास है कि वह सुशिक्षित बनेगी और एक अधिक प्रगतिशील राष्ट्र के निर्माण में योगदान देगी।

अनेक सामाजिक-आर्थिक मुद्दों के बारे में लोगों में जागरूकता पैदा करना जरूरी है। मैं अकसर सभ्य समाज, गैर सरकारी संगठनों और शिक्षित युवाओं से कहती रहती हूँ कि वे सामाजिक कार्य करें तथा लोगों के बीच जागरूकता पैदा करने के लिए उनके साथ नियमित और निरंतर बातचीत करें तथा उनकी क्षमताओं व कौशल के निर्माण में सहयोग करें।

युवाओं को हमारी संस्कृति की समृद्धि और विविधता को सम्मान देना चाहिए तथा हमारे सत्य, सहिष्णुता तथा सभी, विशेषकर अपने माता-पिता, अध्यापकों और बुजुर्गों के प्रति सम्मान देने के प्राचीन मूल्यों को आत्मसात करना चाहिए। सौहार्द और सहिष्णुता की भावना हमारी पहचान है और आपको इन मूल्यों को बनाए रखने के लिए भरसक प्रयास करना होगा। राष्ट्र को अपने प्रत्येक ताने-बाने को मजबूत करने के लिए हरेक व्यक्ति के योगदान की जरूरत है। भारत स्काउट और गाइड जैसे अभियान राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने वाले सहयोगपूर्ण वातावरण का निर्माण करते हैं।

हम जिस धरती पर रह रहे हैं उसे तथा जलवायु परिवर्तन की जिस चुनौती का सामना कर रहे हैं उसकी अनदेखी नहीं कर सकते। आप में से प्रत्येक इस मौसम के अंत तक एक वृक्ष लगाने का संकल्प ले सकते हैं। जल और ऊर्जा का प्रयोग ध्यान से करें क्योंकि दोनों ही संसाधन दुर्लभ हैं और उन्हें बेकार नहीं करना चाहिए। पुराने कपड़े इकट्ठे करें और उन्हें गरीबों में बांट दें। बिना प्रयोग की हुई दवाएं एकत्र करें और गरीब रोगियों को बांटने के लिए उन्हें डॉक्टर को दे दें। इसके अलावा अपने शहर, नगर और गांव को स्वच्छ रखने के लिए साफ-सफाई की आदत डालें। मुझे उम्मीद है कि आप दैनिक जीवन में इन सुझावों पर अमल कर सकेंगे और अपने मित्रों में इनका बढ़ावा व प्रचार करेंगे। यह हमारे वातावरण को साफ रखने, प्रदूषण कम करने और जलवायु परिवर्तन का मुकाबला करने के प्रयासों में महत्त्वपूर्ण योगदान होगा।

इस वर्ष को स्काउटिंग शताब्दी वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। बेडन पावेल ने भारत में इस अभियान की शुरुआत की थी और 1909 में बेंगलुरू में पहली स्काउट यूनिट की स्थापना की थी। 100 वर्ष पूरे करना स्काउटों के लिए एक महत्त्वपूर्ण घटना है। इससे संगठन को आने वाले वर्षों में नई चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा। आज इसकी शाखाओं का जाल बिछा हुआ है और यह भारत के सभी राज्यों में फैला हुआ है। मुझे यह जानकर खुशी हुई कि भारत स्काउट और गाइड के सदस्यों की संख्या लगभग 42.5 लाख है और विश्व की तीसरी सबसे ज्यादा संख्या है। मैं इससे जुड़े सभी लोगों को अपनी बधाई देती हूँ।

मैं, इस महत्त्वपूर्ण अभियान में गहरी रुचि लेने और इस अभियान में शामिल होने के लिए युवाओं को प्रेरित करने हेतु 80 वर्ष के युवा श्री रामेश्वर ठाकुर को बधाई देती हूँ।

इस अभियान में रुचि लेने के लिए मैं श्री वीरभद्र सिंह को बधाई देना चाहूंगी। उनके कार्यों से दूसरे लोगों को भी प्रेरणा मिलेगी।

जय हिन्द।